IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 23, Issue 2, Ver. 1 (February. 2018) 75-78
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

दर्शन की भारतीय परम्परा

डॉ. वीरेन्द्र कुमार जोशी
व्याख्याता संस्कृत
गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय
अलवर

चिन्तन दर्शन का आधार है । चिन्तन के विकास से ज्ञान का क्षेत्र व्यापक होता है । वैदिक आर्यों ने संहिताओं में अनेक दार्शनिक विचारों का संकेत दिया है । वैदिक आर्यों ने बाह्य स्थूल जगत् के साथ – साथ सृष्टि की उत्पत्ति प्रक्रिया , सुव्यवस्थित क्रम , ईश्वर , आत्मा आदि के विषय में गहन चिन्तन किया । दर्शन का जीवन और जगत् से घनिष्ठ सम्बन्ध है ।

दर्शन' पद का शाब्दिक अर्थ है 'देखना' । दृश् धातु में करणार्थक ल्युट् प्रत्यय लगकर दर्शन' पद सिद्ध होता है जिसका अर्थ है "जिसके द्वारा देखा जाय।" जिस चिन्तन प्रक्रिया द्वारा आत्मा , जीव , ब्रह्म आदि तत्त्वों को देखा जाता है और रहस्य को तार्किक प्रक्रियाओं द्वारा अनावृत किया जाये वह 'दर्शन' है । आध्यात्मिक , आधिदैविक और अधिभौतिक दुःखों का आत्यन्तिक नाश करके मोक्ष प्राप्ति ही 'दर्शन' का चरम लक्ष्य है ।

वैदिक संहिताओं में दार्शनिक तत्त्वों का सूत्रपात हुआ। सर्वप्रथम ऋग्वेद में दार्शनिक मन्त्र उपलब्ध होते हैं । नासदीय सूक्त में सृष्टिउत्पत्ति विषयक मत मिलते हैं ।

दर्शन की यह परम्परा संहिताओं , उपनिषदों , गीता से लेकर आज तक प्रवाहमान है । भारतीय दर्शन में दो प्रकार की विचारधारा चली – आस्तिक तथा नास्तिक । वेद को प्रमाण रूप में स्वकार करने वाले आस्तिक दर्शन तथा अस्वीकार करने वाले 'नास्तिक दर्शन' हैं – "नास्तिको वेदनिन्दकः " एक अन्य दृष्टि के अनुसार 'ईश्वर' की सत्ता मानने वाले 'आस्तिक' तथा न मानने वाले 'नास्तिक' कहलाते हैं । आस्तिक दर्शनों में (प) सांख्य, (पप) योग, (पपप) न्याय, (पअ) वैशैशिक, (अ) मीमांसा और (अप) वेदान्त हैं। नास्तिक दर्शनों में (प) चार्वाक, (पप) जैन और (पपप) बौद्ध दर्शन हैं ।

सांख्य दर्शन–

भारतीय दर्शन परम्परा में 'सांख्य प्राचीनतम दर्शन है । उपनिषदों में 'सांख्य' के सूत्र उपलब्ध होते हैं । इसके प्रवर्तक महर्षि कपिल हैं । सांख्य का सम्बन्ध तत्त्वों की संख्या से है । सांख्य का व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है समान ख्याति । अर्थात् सम्यक् दर्शन या सम्यक् ज्ञान । एक अन्य दृष्टि के अनुसार सांख्य का अर्थ है– " चर्चा या विचार करना । " महाभारत में कहा गया है " गुण– दोष मीमांसा पूर्वक किसी विषय पर प्रमाण पुरस्सर विचार को सांख्य कहते है। सांख्य' का सर्वप्रसिद्ध ग्रन्थ ईश्वर कृष्ण की 'सांख्यकारिका' है । इस पर गौडपाद ने भाष्य भी लिखा है । वाचस्पति की तत्व कौमुदी , विज्ञानभिक्षु का सांख्य प्रवचन भाष्य एवं 'सांख्यसार' भी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

सांख्य दर्शन में तीन प्रमाण माने गए हैं – प्रत्यक्ष , अनुमान तथा शब्द । इन तीन प्रमाणों द्वारा 25 तत्वों अथवा प्रमेयों का ज्ञान प्राप्त करके प्रमाता (पुरुष) या आत्मा कैवल्य प्राप्त कर सकता है । यथार्थ ज्ञान ही प्रमा है , अयथार्थ ज्ञान ही अप्रमा है । इसके अतिरिक्त सत्कार्यवाद का विवेचन किया गया है। कार्य अपने कारण में सत् रहता है। 25 तत्वों में प्रकृति और पुरुष ही मुख्य है। प्रकृति–सत्व रज तमोगुणात्मिका है तथा पुरुष (आत्मा) ज्ञाता, ज्ञान का विषय और चैतन्य उसका गुण है। इन दोनों का संयोग पंग्वन्ध न्याय से होता है । जिस प्रकार पङ्ग व्यक्ति चलने में असमर्थ होकर अन्धे का सहारा लेकर, उसका मार्गदर्शन करता है और अन्धा देखने में असमर्थ होकर पंगु की सहायता लेकर उसको गति प्रदान करता है , तथैव प्रकृति स्वयं के दर्शनार्थ पुरुष का तथा पुरुष , कैवल्य प्राप्ति के लिए प्रकृति को आश्रय लेकर अभीष्ट सिद्धि में सफल होते हैं।

प्रकृति और पुरुष के संयोग से सृष्टि क्रम प्रारम्भ होता है । प्रकृति के सत्व , रज तथा तम तीन गुण हैं । जब तक इनकी साम्यावस्था रहती है , तब तक प्रकृति चेष्टा रहित रहती है , किन्तु गुण क्षोभ होते ही प्रकृति सजग होकर कार्य प्रारम्भ कर देती है । प्रकृति से महत् , महत् से अहंकार , अहंकार से 16 तत्व –मन , पञ्चज्ञानेन्द्रियां , पञ्चकर्मेन्द्रियां व पञ्च तन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है । उनमें पञ्च तन्मात्राओं से पञ्चमहाभूत उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार सृष्टि का विकास उत्तरोत्तर होता रहता है । प्रलयावस्था में प्रकृति के तीनों गुण साम्यावस्था में तथा उद्वेगरहित होते हैं । इस सृष्टि में ईश्वर का योगदान बिल्कुल नहीं है। सांख्य निरीश्वरवादी दर्शन है। कहा गया है– 'ईश्वरासिद्धेः प्रामाणाभावात् '।

योग दर्शन –

चित्तवृत्ति के निरोध को योग कहा जाता है दृ

योगश्चित्त वृत्ति निरोध : ।

दर्शन का जीवन के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बन्ध है । योग दर्शन के प्रवर्तक पतंजलि थे , जिनका 'योगसूत्र' सुप्रसिद्ध है । योग साधन के लिए अभ्यास व वैराग्य आवश्यक है। योग के 8 अंग हैं– (1) यम, (2) नियम, (3) आसन, (4) प्राणायाम, (5) प्रत्याहार, (6) धारणा, (7) ध्यान तथा (8) समाधि । योगी क्रमशः एक–एक करके इन सीढ़ियों पर आरुढ़ होकर अन्त में समाधि की अवस्था में आता है , जिससे आठ सिद्धियां – अणिमा , लघिमा आदि प्राप्त होती हैं । समाधि अवस्था में ही केवल्य या मोक्ष की प्राप्ति होती है । योग के अनुसार ईश्वर परम पुरुष है , जो नित्य , सर्वव्यापी , सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान् है । सांख्य और योग दोनों परिणामवादी दर्शन हैं । " आध्यात्मिक विद्या का सैद्धान्तिक रूप सांख्य तथा व्यावहारिक रूप योग है ।" योग से आत्मा, शरीर व मन की शुद्धि हो जाती है ।

न्याय दर्शन

इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम थे । न्याय दर्शन मुख्यतः ज्ञान मीमांसा का विवेचन करता है । न्याय के अनुसार षोडश पदार्थों – प्रमाण , प्रमेय , संशय , प्रयोजन , दृष्टान्त , सिद्धान्त , अवयव , तर्क , निर्णय , वाद , जल्प , वितण्डा , हेत्वाभास , छल , जाति तथा निग्रह स्थान – के तत्त्वज्ञान से ही निःश्रेयस प्राप्ति सम्भव है । न्याय चार प्रमाण मानता है –प्रत्यक्ष , अनुमान , उपमान तथा शब्द। ये ही प्रमा कहलाते हैं ।

न्याय ईश्वर को जगत् का स्रष्टा , पालक तथा संहारक मानता है । वह नित्य परमाणुओं एवं दिक् , काल , आकाश , मन तथा आत्मा से जगत् की सृष्टि करता है । उत्पत्ति के अनन्तर वह यथा समय सृष्टि का संहार भी करता है। ईश्वर नित्य एक तथा अनन्त है। ईश्वर ही जगत् का आधार तथा अदृष्ट का अधिष्ठाता है ।

वैशेषिक दर्शन–

'विशेष' नामक पदार्थ का विवेचन करने के कारण यह वैशेषिक दर्शन कहलाता है । इस दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद हैं । वैशेषिक के प्रधान सिद्धान्त 'न्याय–दर्शन' के समान ही हैं । अतः इस दर्शन को 'समान–तन्त्र' कहा जाता है । न्याय का प्रधान लक्ष्य अन्तर्जगत् तथा ज्ञान की मीमांसा करना है तथा वैशेषिक का मुख्य लक्ष्य बाह्य–जगत की विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत करना है ।

वैशेषिक दर्शन में द्रव्य , गुण , कर्म , सामान्य , विशेष , समवाय तथा अभाव नामक सात पदार्थ हैं । इन पदार्थों के ज्ञान हो जाने पर तथा आत्मा के स्वरूप परिचय से ही मोक्षोपलब्धि सम्भव है । इस दर्शन में प्रत्यक्ष , अनुमान , उपमान तथा शब्द ये चार प्रमाण हैं ।

परमाणुवाद वैशेषिक दर्शन की विशेषता है। इसके अनुसार भौतिक जगत् परमाणुओं द्वारा ही निर्मित हुआ है ।

मीमांसा दर्शन –

भारतीय दर्शन में वैदिक कर्मकांड का अनुसरण करने वाला दर्शन मीमांसा है । इस दर्शन के प्रतिपादक महर्षि जैमिनी हैं । मीमांसा दर्शन का मूल ग्रन्थ जैमिनी सूत्र है । इस दर्शन के अनुसार शब्द और अर्थ का सम्बन्ध नित्य है ।इस दर्शन का मुख्य उद्देश्य है , प्राणी वेद के द्वारा प्रतिपादित अभिष्ट साधक कार्यों में लगे और अपना वास्तविक कल्याण करें । मोक्ष का साधन निष्काम धर्माचरण माना गया है । मीमांसकों की धारणा है कि आत्मा की मोक्ष अवस्था निर्द्वन्द्वकी दशा है , जिसमें आत्मा अपने शुद्ध रूप में विद्यमान रहती है ।

वेदान्त दर्शन–

वेद के ज्ञानकाण्ड का प्रतिपादन करने वाला दर्शन वेदान्त है । इसे ही उत्तरमीमांसा कहा जाता है । उपनिषदों के विषयों की व्याख्या करने के कारण 'वेदान्त' कहलाता है। वेदान्त के अनुसार' आत्म' तत्व को जान कर ही मनुष्य मोक्ष का अधिकारी हो जाता है और ब्रह्म के सायुज्य को प्राप्त करता है– ब्रह्मविद ब्रह्मैव भवति ।

वस्तुतः आत्मा ही ब्रह्म है जो माया के आवरण से स्वयं को भिन्न समझने लगती है और जगत् में जन्म ग्रहण करती है ।

'वेदान्त' के आधारभूत ग्रन्थ – बादरायण का ब्रह्म सूत्र तथा भगवद्गीता हैं । वेदान्त में तीन सिद्धान्तों की स्थापना हुई – अद्वैतवाद , विशिष्टाद्वैत तथा द्वैतवाद । श्री शंकराचार्य ने 'ब्रह्म सत्य है जगत् मिथ्या है तथा जीव ही ब्रह्म है – दूसरा नहीं , सिद्धान्त का प्रतिपादन कर अद्वैतवाद की स्थापना की है– '

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः ।"

रामानुज ने ब्रह्म , जीव तथा जगत् की पृथक् – पृथक् सत्ता मानकर भी उनमें समन्वित रूप 'ब्रह्म' माना। उनके अनुसार जीव कभी भी ब्रह्म रूप में नहीं हो सकता अपितु ब्रह्म के सायुज्य को अवश्य प्राप्त कर सकता है यही 'विशिष्टाद्वैत' है। मध्वाचार्य ने 'जीव' और ब्रह्म की पृथक्–पृथक् सत्ता मानकर 'द्वैतवाद' की स्थापना की । आचार्य शंकर ने शारीरिक भाष्य 'विवेचक चूड़ामणि' ग्रंथ लिखे, रामानुज ने श्रीभाष्य' और वल्लभाचार्य ने 'अणु भाष्य' लिखा । वेदान्त के महावाक्य तत्त्वमसि और अहं ब्रह्मास्मि जीवात्मा और ब्रह्म की एकता के सूचक हैं ।

आचार्य शंकर ने जगत् को मिथ्या व अवास्तविक माना है । उन्होंने मायावाद की स्थापना की । माया से उपहित चैतन्य ही जीव है । माया की आवरण व विक्षेप शक्तियों से आच्छत्र जीव ही जगत् की सृष्टि कारण बनता है। शंकर 'पञ्चीकरण' प्रक्रिया से सृष्टि का विकास मानते है।

चार्वाक दर्शन–

यह दर्शन भौतिक जगत् को प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में स्वीकार करता है । इसके अनुसार ईश्वर , परलोक , स्वर्ग , नरक तथा आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है । यह संसार ही जीव का क्रीड़ास्थल है । चार्वाकों के जीवन का मुख्य उद्देश्य प्राप्ति तथा भोग है । इनका यह नाम " चारु वाक" अर्थात् सुन्दर वाणी करने के कारण पड़ा । खाओ , पीओ , मौज उड़ाओं इस सिद्धान्त के कारण भी इनकी चार्वाक संज्ञा मानी जाती है । कुछ लोग बृहस्पति के शिष्य चार्वाक द्वारा प्रचारित होने के कारण इस दर्शन को चार्वाक दर्शन कहते हैं । इस दर्शन का प्राचीन नाम लोकायत है । इस मत का पोषक यह श्लोक अति प्रसिद्ध है –

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् , ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् भस्मीभूतस्त देहस्य , पुनरागमनं कुतः ॥

जैन दर्शन

ऋषभदेव से लेकर महावीर स्वामी तक 24 तीर्थंकर हुए हैं । इन्होंने ही जैन मत की स्थापना की । इनके उपदेश की भाषा प्राकृत थी । जैन दर्शन ईश्वर की सत्ता का निषेध करता है । अन्य दर्शनों में जो ईश्वर का स्थान है जैन दर्शन वह स्थान तीर्थङ्करों को देता है । इसके अतिरिक्त स्याद्वाद या सप्तभङ्गी नय का प्रतिपादन जैन धर्म का वैशिट्य है । वस्तु के अनन्त धर्म होते हैं दृ

'अनन्त धर्मकं हि वस्तुः'।

सामान्य पुरुष वस्तुओं के आंशिक ज्ञान को ही जान पाता है यही ज्ञान 'नय' कहलाता है । यह नयवाद ही स्यादवाद् है क्योंकि प्रत्येक नय के साथ 'स्यात' का प्रयोग किया जाता है । यहीं अनेकान्तवाद है । इस विचार धारा को रखने से वस्तु के एकपक्षीय ज्ञान की अभिव्यक्ति होती रहती है ।

बौद्ध दर्शन दृ

महात्मा बुद्ध बौद्ध दर्शन के प्रवर्तक हैं । बुद्ध के उपदेशों का संगह त्रिपिटकों में है। विनय

पिटक , सुत्त पिटक और अभिधम्मपिटक । इन त्रिपिटकों की रचना पाली भाषा में हुई है । विनय

पिटक में भिक्षु संघ के नियमों का वर्णन है। सुत्त पिटक में बुद्ध के उपदेशों और वार्तालाप का तथा अभिधम्मपिटक में दार्शनिक विचारों का संग्रह है। बौद्ध दर्शन का आरम्भ चार आर्य सत्यों से होता है – संसार में सर्वत्र दुःख है – सर्वत्रदुःखम् । दुःख का कारण है – दुःख समुदयम् – यह कारण प्रतीत्य समुत्पाद अथवा द्वादश निदानों से व्यक्त होता है । दुःखनिरोध सम्भव है । अष्टांगिक मार्ग द्वारा दुःख नष्ट करके निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है । इनके अतिरिक्त क्षणिकवाद , अर्थ क्रियाकारित्व आदि बौद्ध दर्शन के श्रेष्ठ सोपान हैं ।

इस प्रकार भारतीय दर्शन परम्परा प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। यह परम्परा परिवर्धित , परिष्कृत होती हुई सामाजिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के द्वारा मानव कल्याण में निरन्तर संलग्न है ।

सन्दर्भ – ग्रन्थ – सूची :–

1– भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व – डॉ. श्रीकृष्ण ओझा 2 – प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति – राजकिशोर सिंह एवं उषा यादव

3– संस्कृत – वाङ्मय का बृहद् इतिहास

प्रधान सम्पादक – पद्मभूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय , सम्पादक प्रो. व्रज बिहारी चौबे

4 – संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी

5 – संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

6 – वैदिक संस्कृति और संस्कृत साहित्य का इतिहास – रामानुज तिवारी